IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue -12 2022

पर्वतीय क्षेत्र के सीमान्त कृषकों पर पलायन का प्रभाव

[1]**चम्पा नेगी** , अर्थशास्त्र विभाग , एस0 एस0 जे0 विश्वविद्यालय / परिसर , अल्मोड़ा , उत्तराखण्ड (भारत) –263601

सारांश – *भारत एक कृषि प्रधान देश है देश की अधिकतम जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है एवं देश की अधिकतम जनसंख्या कृषि कार्य में संलग्न है भारत की जनसंख्या का अधिकांश भाग ग्रामीण क्षेत्र में निवास करता है । पर्वतीय क्षेत्र में कृषक की आमदनी का मुख्य साधन कृषि होता है एवं पशुपालन में संलग्न होते हैं । पर्वतीय क्षेत्रों में पलायन के कारण कृषि योग्य भूमि कम हो रही है एवं अधिकतम पुरूष रोजगार की तलाश में पलायन कर लेते हैं जिसकी कारण महिलाओं पर घरेलू कार्य एवं कृषि कार्य का अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तराखण्ड़ राज्य के अल्मोड़ा जिले के स्याल्दे ब्लॉक का अध्ययन किया गया है अल्मोड़ा जिला पूर्ण रुप से एक पर्वतीय जिला है। विकासखण्ड स्याल्दे की ग्रामीणों का 50.25 प्रतिशत लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि बागवानी एवं पशुपालन है।*

मुख्य बिन्दु – *कृषक , पर्वतीय , पलायन , आमदनी , पशुपालन , बेरोजगारी*

प्रस्तावना –

जब कोई अपने स्थान को छोडकर दूसरे स्थान को जाता है वहॉ स्थायी या अस्थायी निवास करता है। एवं अपने जन्म स्थान पर आता जाता रहता है या सम्पर्क में रहता है उसे पलायन कहते हैं।

सदियों से कृषि हमारी अर्थव्यवस्था, संस्कृति और पहचान का आधार रही है। जहाँ भूमि माँ के समान है, वहीं कृषक उसका सबसे समर्पित पुत्र। ये दोनों मिलकर एक ऐसी कहानी बुनते हैं जो न केवल हमारी खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करती है, बल्कि ग्रामीण जीवन की धड़कन भी बनी हुई है। कृषि केवल एक व्यवसाय नहीं है यह एक जीवन शैली है, एक परंपरा है जो पीढ़ियों से चली आ रही है, और भारतीय समाज की रीढ़ है। कृषि का अर्थ केवल अन्न उपजाना नहीं है। यह पशुधन पालन, मत्स्य पालन, वानिकी और संबद्ध गतिविधियों का एक व्यापक क्षेत्र है जो लाखों लोगों को सीधे या परोक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है। भारत के विशाल ग्रामीण भूभाग में, कृषि ही मुख्य गतिविधि है, जो लोगों को जमीन से जोड़े रखती है। यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था का इंजन है, जो रोजगार के अवसर पैदा करता है, आय वितरित करता है और ग्रामीण–शहरी प्रवास को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कृषि आधारित उद्योग, जैसे खाद्य प्रसंस्करण, वस्त्र और चीनी उद्योग, भी देश के औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। कृषक, वह कड़ी मेहनत करने वाला व्यक्ति है जो सूरज की तपिश, बारिश की मार और मौसम की अनिश्चितताओं का सामना करते हुए भी खेतों में डटा रहता है। वह केवल अनाज नहीं बोता, बल्कि आशाएँ बोता है वह केवल फसल नहीं काटता, बल्कि देश का पेट भरता है। किसान का जीवन चुनौतियों से भरा होता है। मानसून की अनिश्चितता, बाजार में कीमतों का उतार–चढ़ाव, ऋण का बोझ, कीटों का हमला और प्राकृतिक आपदाएं उनके सामने खड़ी कुछ प्रमुख बाधाएं हैं। इसके बावजूद, कृषक अपनी निष्ठा

Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved

और समर्पण के साथ काम करता रहता है, यह जानते हुए कि उसकी मेहनत ही देश की खाद्य सुरक्षा का आधार है। आज, भारतीय कृषि कई बदलावों के दौर से गुजर रही है। हरित क्रांति ने देश को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया, लेकिन इसके साथ ही रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग जैसी नई चुनौतियाँ भी पैदा हुईं। वर्तमान में, सरकार और कृषि वैज्ञानिक सतत कृषि, जैविक खेती, सटीक कृषि और जलवायु–स्मार्ट कृषि पर जोर दे रहे हैं ताकि पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना उत्पादन बढ़ाया जा सके। सिंचाई के नए तरीके, फसल बीमा योजनाएँ और किसानों को सीधे लाभ पहुँचाने वाली पहलें भी कृषकों के जीवन को बेहतर बनाने का प्रयास कर रही हैं।

साहित्य पुनरावलोकन –

पलायन का कृषि एवं अन्य क्षेत्रों पर प्रभाव से संबंधित अनेक पुस्तकें जनसख्या पत्र, पत्रिकाएं, जाँच समितियां का उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है इसके अतिरिक्त सरकार की नीतियों के चलते हुए कृषकों की स्थिति में सुधार करना आदि तथा विभिन्न लेखकों के द्वारा पुस्तकों पूर्व में किये गये अध्ययन के विषय में प्राप्त हुई है।

- **डॉ भट जयारमा एव ंबी नागेश** – 'इम्पैक्ट ऑफ माइग्रेशन ऑन एग्रीकल्चर –अ स्टडी' 2018
- **कुमार देवेन्द्र व सत्तार अब्दुल एवं कुलदीप भारती** – 'पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन' 2020
- **डॉ0 चंद्र विनय एवं पोखरिया पुष्पा** – 'उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्ड़ल में पलायन का आर्थिक स्तर पर प्रभाव' 2022

उद्देश्य –

1. अध्ययन क्षेत्र में पलायन के कारणों का अध्ययन करना ।
2. अध्ययन क्षेत्र के आय के स्त्रोतों का अध्ययन करना ।
3. पलायन का सीमान्त कृषकों पर प्रभाव का अध्ययन करना ।

भारत में पलायन के कारणों का विवरण –

क्र0 सं0	भारत में पलायन के कारण	कुल जनसंख्या (मिलियन में)	प्रतिशत
01	व्यवसाय	1.1	1.12%
02	शिक्षा	2.9	2.95%
03	श्रोजगार	14.7	14.94%
04	शादी	43.1	43.80%
05	जन्म के बाद स्थान छोडना	6.5	6.61%
06	पलायन परिवार के साथ	20.6	20.93%

07	अन्य कारण	9.5	9.65%
	कुल	98.4	100%

स्त्रोत – भारत की जनगणना , 2001 , पेज – 3

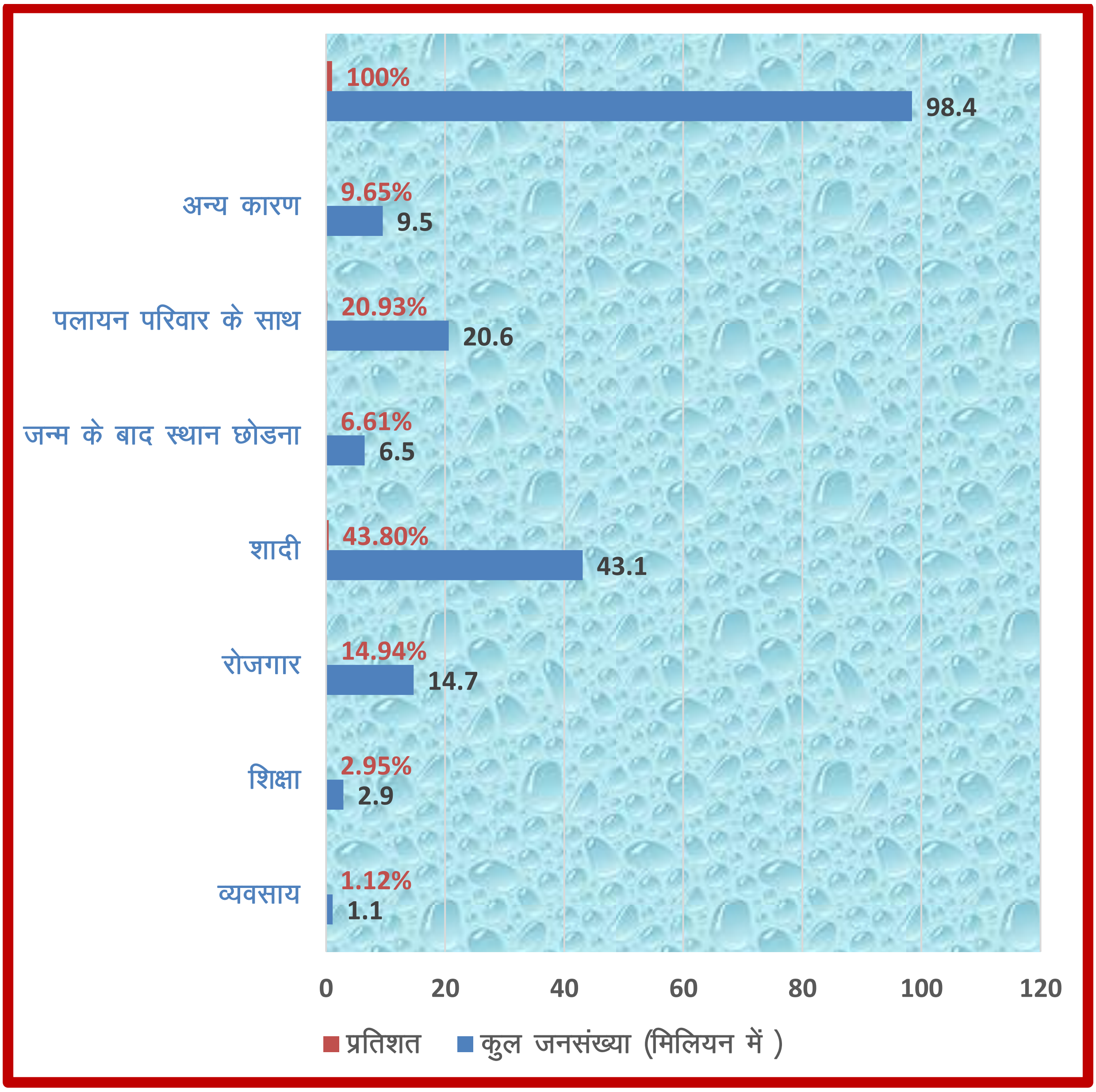

स्त्रोत – **egyankosh.ac.in**

उत्तराखण्ड के ग्रामीण जनसंख्या का पलायन विभिन्न क्षेत्रों की ओर–

क्र0 सं0	क्षेत्र का नाम	प्रतिशत
1	जिला मुख्यालय	15.11%
2	राज्य के अन्य जिलों में	35.48%
3	देश के दूसरे जिले में	29.00%

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue -12 2022

4	देश से बाहर	1.00%
5	नजदीक के कस्बे की ओर	19.41%

स्त्रोत – पलायन आयोग उत्तराखण्ड 2018

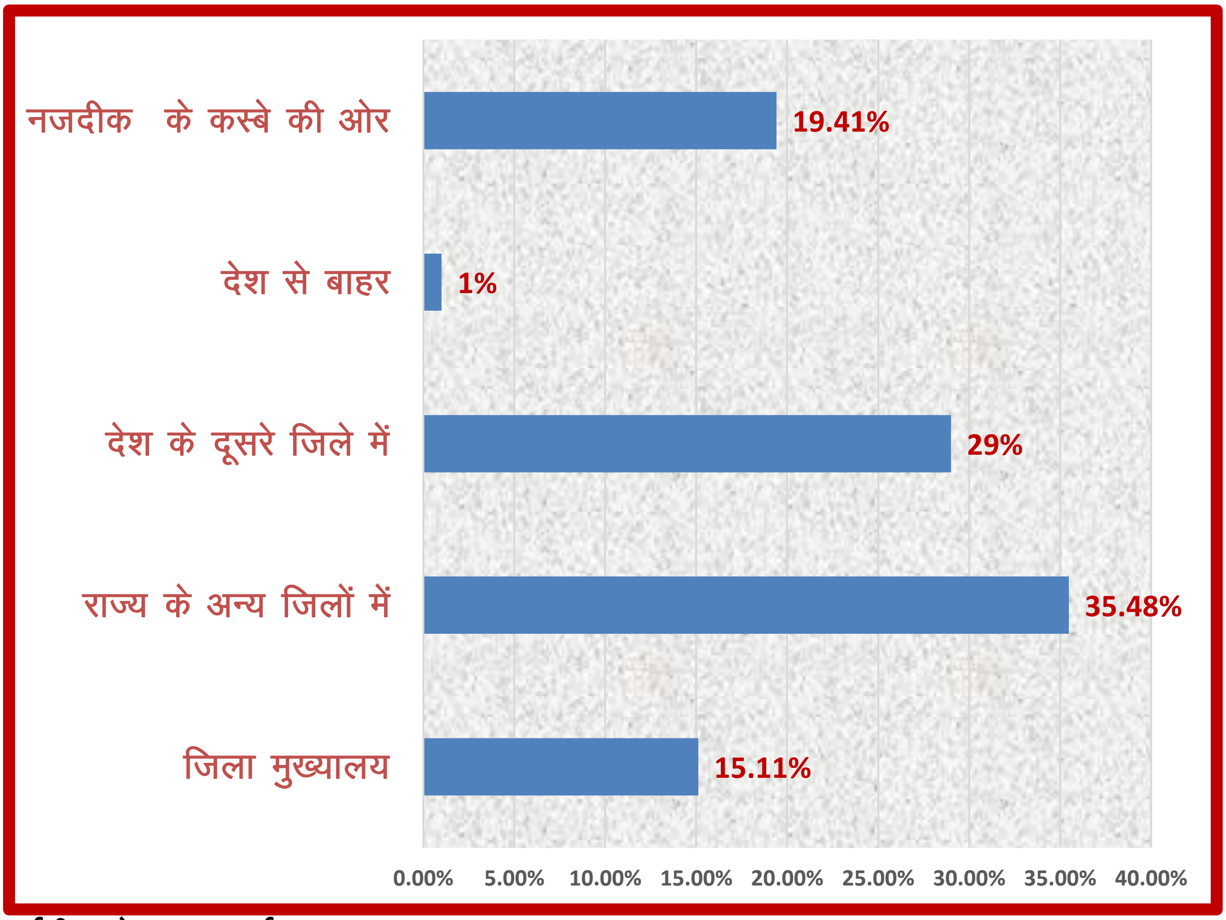

पर्वतीय क्षेत्र का अर्थ –

पलायन का पर्वतीय क्षेत्र की कृषि पर प्रभाव –पर्वतीय क्षेत्र में पलायन की वजह से अधिकतम भूमि बंजर होती जा रही है ।

पर्वतीय क्षेत्र में पलायन के प्रमुख कारण –

रोजगार पलायन का एक प्रमुख कारण है कोई भी व्यक्ति जीवन यापन के लिए अन्यत्र पलायन करता है ।

शिक्षा भी पलायन का एक प्रमुख कारण है आज भी पर्वतीय क्षेत्रों गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव है जिसकी वजह से लोग अपने बच्चों को शहरी क्षेत्र के स्कूलों एवं उच्च शिक्षा में भेजना चाहते हैं।

स्वास्थ्य सुविधा –पर्वतीय क्षेत्रों में अस्पतालों में डॉक्टरों की उचित व्यवस्था न होने के कारण भी लोग पलायन कर रहे हैं ।

शहरो का आकर्षण – पलायन का एक कारण शहरों की ओर आकर्षण भी है । लोगों का दिन प्रतिदिन शहरों की ओर रुझान बढ़ता जा रहा है ।

शोध प्रविधि –

समंक संकलन – शोधार्थी द्वारा प्रस्तावित अध्ययन को और स्पष्ट बनाने के लिए द्वितीयक समंकों का प्रयोग भी किया गया है। शोधार्थी द्वारा कृषकों के प्राथमिक एवं द्वितीयक समंक प्रस्तुत किए गए हैं।

द्वितीयक समंक – प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी के द्वारा द्वितीयक समंकों का संकलन पुस्तकों एवं शोध पत्र द्वारा किया गया है। एवं पुस्तकों , समाचार पत्रों ,वेबसाइट एवं जनगणना आदि को लिया गया है ।

अध्ययन क्षेत्र –

प्रस्तुत शोध पत्र में पर्वतीय कृषकों पर पलायन के प्रभाव का अध्ययन किया गया है । पर्वतीय क्षेत्र में कृषि कार्य में अधिकतम महिलाएं संलग्न हैं। प्रस्तुत शोध में उत्तराखण्ड के अल्मोड़ा जिला को लिया गया है । उत्तराखण्ड में दो मण्डल हैं । कुमाऊँ मण्डल में चार जनपद पूर्णतया पर्वतीय और जनपद नैनीताल में 5 विकासखण्ड पर्वतीय और 3 विकासखण्ड भाबर क्षेत्र के अर्न्तगत आते हैं। जबकि ऊधमसिंह नगर पूर्णरूपेण मैदानी सम्भाग है।

उत्तराखण्ड के प्रशासनिक संरचना

क्र0सं0	मदें	विवरण
1	मण्डल	02
2	जनपद	13
3	तहसील	78
4	उपतहसील	07
5	विकासखण्ड	95
6	न्याय पंचायतें	670
7	ग्राम	7541
	कुल ग्राम	16826

स्रोत : जनगणना 2011

स्याल्दे ब्लॉक के पर्वतीय कृषकों पर पलायन का प्रभाव – उत्तराखण्ड राज्य के अन्तर्गत दो मडण्ल है, गढ़वाल मण्डल व कुमाऊॅ मण्डल। कुमाऊँ मण्डल के अन्तर्गत छः जनपद क्रमशः

अल्मोड़ा बागेश्वर, चम्पावत, नैनीताल पिथौरागढ़ एवं उधमसिंह नगर सम्मिलित है तथा गढ़वाल मण्डल के अन्तर्गत 7 जनपद है जिसमें देहरादून, हरिद्वार, उत्तरकाशी, टिहरी, पौढ़ी गढ़वाल, चमोली, व रूद्रप्रयाग सम्मिलित है। इस प्रकार उत्तराखण्ड राज्य 13 जनपदों से मिलकर बना है। जनपद अल्मोड़ा कुमाऊँ मण्डल का पर्वतीय क्षेत्र में आने वाला जनपद है। जो कि 11 विकासखण्डों में विभक्त है जिसमें क्रमश विकास खण्ड स्यालदे, चौखुटिया, भिकियासैण, ताड़ीखेत, सल्ट, द्वाराहाट, ताकुला, भैसियाछाना, हवालबाग, लमगड़ा, धौलादेवी है।

उत्तराखण्ड में 13 जिले हैं। जिसमें से एक पर्वतीय जिला अल्मोडा है जिसमें स्याल्दे ब्लॉक का अध्ययन किया गया है । स्याल्दे ब्लॉक में पलायन की वजह से कृषि पर प्रभाव पडा है एवं कृषकों की स्थिति पर भी प्रभाव पडा है। दिन प्रतिदिन बढते पलायन के कारण पर्वतीय क्षेत्रों की अधिकतम भूमि बंजर पडने लगी है क्योंकि लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं उसका मुख्य कारण रोजगार है

अल्मोडा जिले के ग्राम पंचायतों का मुख्य व्यवसाय या आय के स्त्रोत –

क्र0सं0	व्यवसाय	प्रतिशत
1	मजदूरी	34.13%
2	कृषि	39.35%
3	उद्यान	1.51%
4	डेरी	3.66%
5	सरकारी सेवा	10.86%
6	अन्य सेवा	10.50%
	कुल	**100%**

स्त्रोत – पलायन आयोग की रिपोर्ट 2018

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है अल्मोडा जिले की अधिकतम पंचायतें कृषि कार्य में संलग्न है कृषि का प्रतिशत 39.35 है सबसे कम ग्राम पंचायतें उद्यान व्यवसाय में संलग्न हैं । उद्यान में 1.51 प्रतिशत लोगों का व्यवसाय है।

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue -12 2022

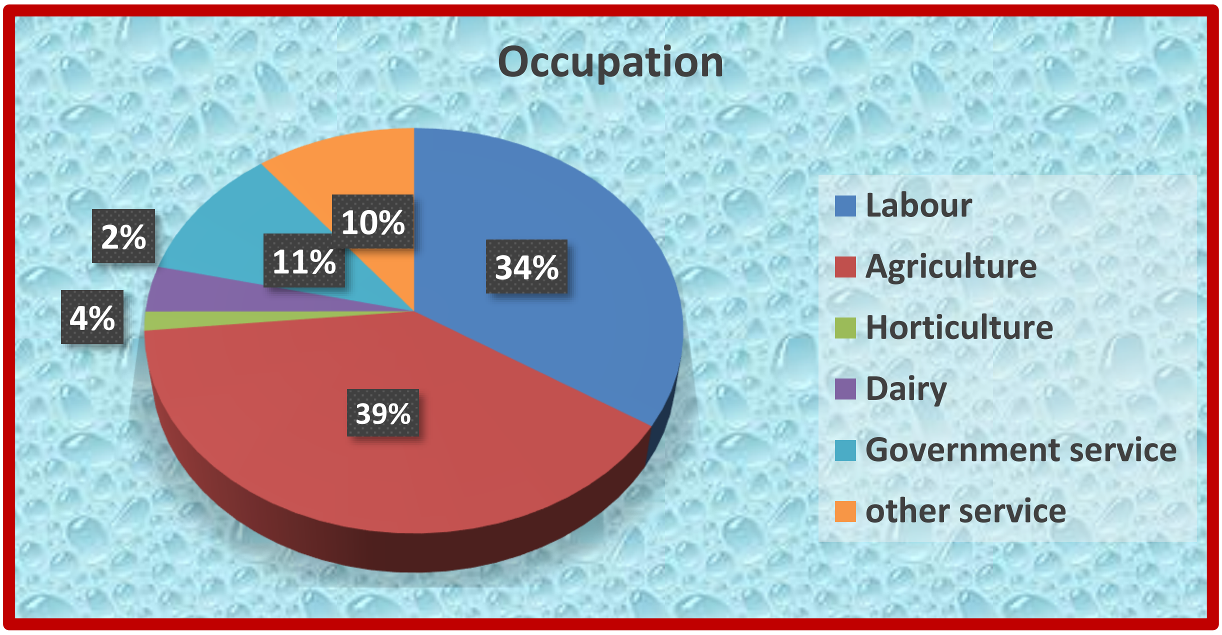

विकासखण्ड स्याल्दे में जनसंख्या का आर्थिक वर्गीकरण वर्ष 2011

क्र0सं0	कर्मकार	जनसंख्या
1	कृषक	12801
2	कृषि श्रमिक	335
3	पारिवारिक उद्योग	235
4	सीमान्त कर्मकार	13154
5	अन्य	1886
कुल		**28411**

स्त्रोत–सांख्यिकी पत्रिका 2021 जनपद – अल्मोड़ा

उत्तराखण्ड राज्य में विभिन्न समस्याओं के कारण पलायन –

वर्ष 2018

क्र0 सं0	पलायन विभिन्न क्षेत्रों में	प्रतिशत
1	रोजगार एवं आजीविका की समस्या से पलायन	50.17%
2	चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में पलायन	8.83%
3	शिक्षा सुविधा के अभाव में पलायन	15.21%
4	सडक बिजली पानी की कमी से पलायन	3.74%
5	कृषि भूमि में पैदावार की कमी से पलायन	5.44%
6	सगे सम्बन्धियों की देखभाल से पलायन	2.52%
7	जंगली जानवरों के भय से पलायन	5.61%
8	अन्य कारणों से पलायन	8.48%
	कुल	**100%**

स्त्रोत – पलायन आयोग उत्तराखण्ड 2018

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue -12 2022

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि उत्तराखण्ड की 50.17 प्रतिशत सर्वाधिक रोजगार एवं आजीविका के लिए पलायन कर रही है। कृषि भूमि में पैदावार की कमी के कारण भी 5.44 प्रतिशत पलायन हुआ है। जंगली जानवरों के भय से भी 5.61 प्रतिशत पलायन हुआ है।

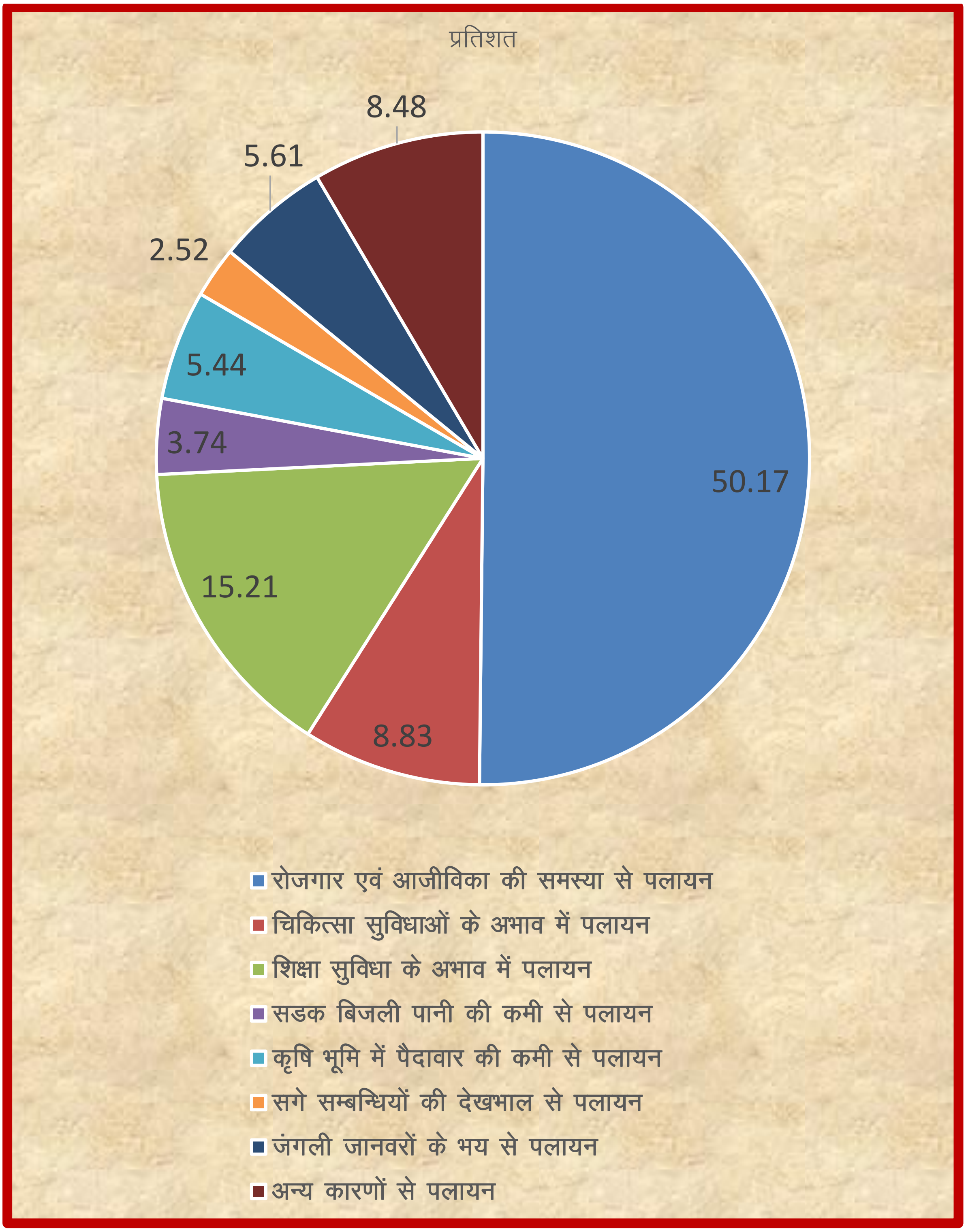

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences

विकासखण्ड स्याल्दे में पलायन का कारण –

क्र0सं0	**पलायन विभिन्न क्षेत्रों में**	**प्रतिशत**
1	रोजगार एवं आजीविका की समस्या से पलायन	65.00%
2	चिकित्सा सुविधाओं के अभाव में पलायन	4.79%
3	शिक्षा सुविधा के अभाव में पलायन	4.17%
4	सड़क बिजली पानी की कमी से पलायन	1.48%
5	कृषि भूमि में पैदावार की कमी से पलायन	1.68%
6	सगे सम्बन्धियों की देखभाल से पलायन	1.73%
7	जंगली जानवरों के भय से पलायन	5.00%
8	अन्य कारणों से पलायन	16.15%
	कुल	**100%**

स्त्रोत – पलायन आयोग उत्तराखण्ड 2018

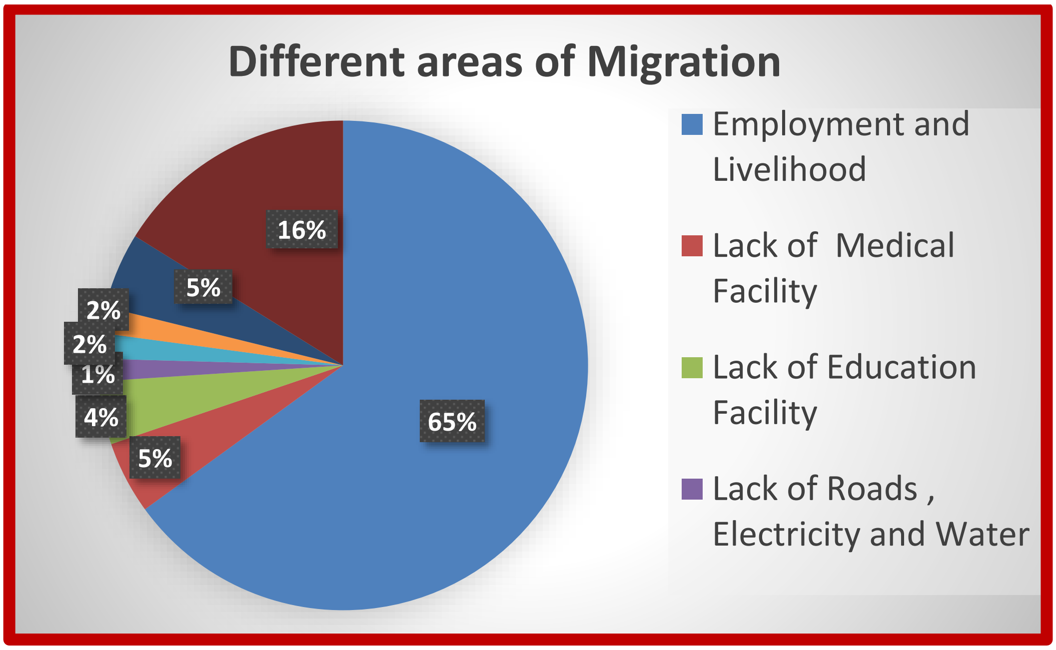

IJFANS International Journal of Food And Nutritional Sciences

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved. Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 11, Issue -12 2022

न्यादर्श क्षेत्र में कृषक –

विकासखण्ड स्याल्दे	संख्या
मुख्य कृषक	12801
सीमान्त कृषक	12295
कार्यशील जनसंख्या	28411
कुल जनसंख्या	44747

पलायन का पर्वतीय क्षेत्र के सीमान्त किसानों पर प्रभाव –

1. कृषि योग्य भूमि में कमी होना
2. महिलाओं पर बोझ बढना
3. बंजर भूमि में वृद्वि होना

निष्कर्ष –

ग्रामीण क्षेत्र में कृषकों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति को मजबूत बनाने में कृषि एवं पशुपालन का विशेष योगदान है । कृषि के अतिरिक्त पशुपालन कृषकों की आय में वृद्वि करने का साधन है । वर्तमान समय में पर्वतीय क्षेत्रों में बहुत अधिक स्तर पर पलायन हो रहा है। इसके मुख्य कारण रोजगार के साधनों का उपलब्ध न होना है । कृषि में पायी जाने वाली छिपी हुई बेरोजगारी के कारण कृषक अपनी आजीविका नहीं चला पाते हैं । इसलिए ही उन्हें शहरों की ओर पलायन करना पड रहा है । वर्तमान समय में पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि एवं पशुपालन कार्य में अधिकतम महिलाएं ही कार्य कर रहीं है।

सुझाव –

कृषकों की स्थिति को अधिक सशक्त बनाने के लिए सुझाव दिए गए हैं

1. पर्वतीय क्षेत्रों में भी बाजार की सुविधाएं उपलब्ध की जाए। जिससे कृषक अपने उत्पादों की अच्छी कीमत पर ब्रिक्री कर सके । और जिससे पलायन कम किया जा सके ।
2. जंगली जानवरों से सुरक्षा के लिए उचित व्यवस्था की जाए।
3. कम लागत पर खाद उपलब्ध करायी जाए।
4. सरकार द्वारा चलायी जा रही योजनाओं से जागरूक किया जाना चाहिए ।
5. सिचाई सुविधा के अभाव होने के कारण अधिक से अधिक मानसून आधारित कृषि फसलों पर अधिक जोर दिया जाए।

सन्दर्भ सूची –

1. डॉ भट जयारमा एवं नागेश (2018) : 'इम्पैक्ट ऑफ माइग्रेशन ऑन एग्रीकल्चर –अ स्टडी'
2. कुमार देवेन्द्र व सत्तार अब्दुल एवं कुलदीप भारती (2020) : 'पलायन करने वाले श्रमिक परिवारों के सामाजिक आर्थिक स्थिति का उनके बच्चों की शिक्षा पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन'
3. डा0 चंद्र विनय एवं पोखरिया पुष्पा (2022) : 'उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्ड़ल में पलायन का आर्थिक स्तर पर प्रभाव'
4. नौटियाल विकास (2011) : आधुनिक एवं समकालीन उत्तराखण्ड हिमालय बिनसर पब्लिशिंग कम्पनी
5. पांडे बद्रीदत्त (1937) : कुमाऊँ का इतिहास
6. सांख्यिकी पत्रिका 2021 , जनपद – अल्मोडा , अर्थ एवं संख्याधिकारी , विकासभवन अल्मोड़ा,
7. पलायन आयोग उत्तराखण्ड 2018
8. थपलियाल गुरु प्रसाद एवं सिंह प्रमोद (2019) : उत्तराखण्ड प्रदेश में ग्रामीण जनसंख्या के पलायन का भौगोलिक अध्ययन
9. जनगणना 2011
10. भारत की जनगणना , 2001 पेज – 3
11. egyankosh.ac.in
12. Wikipedia.org